Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 46-50

प्रवासी साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप

कमलेश कुमार मेहरा

वरिष्ठ अध्यापक, हिंदी विभाग
कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान किया हैं और अब हिन्दी का प्रवासी साहित्य भारतेतर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनता हैं जिसके मूल में भारतवंशियों का स्वदेश-प्रेम, भाषा, संस्कृति-प्रेम के साथ उनकी संलग्नता, सहभागिता एवं सहयोग अटूट रूप में संबद्ध हैं। यह सेतु विश्व-व्यापी हिन्दी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है। विभिन्न देशों के हिन्दी लेखकों एवं हिन्दी समाज भारत के हिन्दी समाज से जुडते हैं और परस्पर भी एक-दूसरे के निकट आकर हिन्दी-विश्व को सबल एवं स्थायित्व प्रदान करते हैं। हिन्दी विश्व में हमारी एकात्मकता तथा भारतीय के रूप में हमारी पहचान का आधार बनती है। हिन्दी साहित्य विदेशों में भारतीयता एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना का संवाहक बनता हैं।

संकेताक्षर : *प्रवासी सहभागिता, सांस्कृतिक, चेतना, संलग्नता, विश्वव्यापी*

प्रस्तावना

हिन्दी प्रवासी साहित्य हिन्दी के विराट संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना दृष्टिकोण, परिस्थिति, और सृजन प्रक्रिया रूप प्रदान करके हिन्दी-संसार में अपना योगदान किया हैं, हिन्दी साहित्य में यह प्रवासी हिन्दी साहित्य संवेदना, परिवेश और सरोकार में एकदम भिन्न हैं, क्योंकि उनकी चिंताएं, समस्याएं, तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न हैं। इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं-एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता है, और हिन्दी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है, दूसरे वह हिन्दी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रखता हैं।

किसी भी भाषा का प्रवासी साहित्य उस समाज के लोगों के प्रवास करने तथा यायावरी वृत्ति के स्वरूप पर निर्भर करता है। मानव-जाति के इतिहास में प्रवास की दो प्रकार की प्रवृतियाँ मिलती हैं-स्वेच्छा से प्रवास और विवशता में प्रवास। भारत से असंख्य धर्म-प्रचारक और व्यापारी स्वेच्छा से विदेश जाते रहे हैं और ऐसे ही लोग विदेशों से भारत आते रहे हैं। भारत में असंख्य धर्म-प्रचारक ओर व्यापारी स्वेच्छा से हजारों वर्षों से भारत में आते रहे हैं। भारत का इतिहास विदेशी लुटेरों, धर्म-प्रचारकों, व्यापारियों तथा यात्रियों के भारत-आगमन की घटनाओं से भरा पड़ा है। भारत में जो भी लोग बाहर से आये उनका उद्देश्य इस देश की धन-सम्पति लूटने के साथ अपने धर्म का विस्तार करना भी था। मनुष्य की प्रवास की इस प्रवृत्ति ने कई देशों के इतिहास बदल दिए। उनकी मूल संस्कृति नष्ट कर दी।

भारत में जब यूरोपियन आततायियों का अधिपत्य हो गया तो उन्होंने भारत के साथ अनेक देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किये और वे अपने-अपने उपनिवेशी देशों में भारतीयों को छल-कपट से गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले गये। इनमें से अधिकांश भारतीयों को यह मालूम नही था कि उन्हें कहा किस वास्तविक उद्देश्य से जहाज में बैठाकर ले जाया जा रहा हैं। यह भारतीयों का ऐसा यातनामय प्रवास था कि उन्हें मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटिश गुयाना आदि देशों में पहुँचकर ही ज्ञात होता था कि उन्हें धोखे में रहकर खेतों में काम करने के लिए मजदूर बना कर लाया गया है। ये भारतीय मजदूर 'इंडियन इंडेचर लेबर सिस्टम' अर्थात् शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत ले जाए गए थे। ये भारतीय लोग अधिकांश रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार

आदि प्रदेशों से गये थे। जिनकी मातृभाषा भोजपुरी थी, किन्तु ये लोग अवधी में रची रामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा आदि धार्मिक ग्रन्थ अपने साथ लाये थे जो उनके अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के आधार बने। ये भारतीय मजदूर अपनी बेकारी, गरीबी, प्रलोभन आदि विभिन्न कारणों से अपनी मातृभूमि को छोड़कर एक अनजानी दुनिया में चले आये थे, लेकिन इस नरक जैसे वनवास में अपने जहाजी भाईयों के प्रेम, धार्मिक ग्रन्थों से प्राप्त जीवन-शक्ति तथा बैठकाओं की सामुदायिकता आदि से अपनी भारतीयता और जीवन-संस्कृति को कायम रख सके।

मॉरिशस के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. ठाकुरदत्त पाण्डेय राम का गुणानुवाद करते हुए अपने सम्पूर्ण कष्टों व पीड़ाओं को धैर्य के अश्रुओं से दूर करते थे और इस प्रकार की चौपाईयों से भौतिक एवं आध्यात्मिक उद्बोधन प्राप्त करते थे 'अब कछु नाथ न चाहिए मोरे, दीनदयाल अनुग्रह तोरे'।

विश्व के अनेक देशों में पहुँचे भारतवंशियों के इस संसार से सम्पर्क का रास्ता आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने, खोला जब वे उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक में भारतीय प्रवासियों की मदद के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। वहाँ भारतीय व्यापारियों तथा गिरमिटिया मजदूरों के स्वत्व, स्वाभिमान एवं अधिकारों के लिए अहिंसक संघर्ष किया था। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से अंग्रेजी हिन्दी तमिल भाषाओं में इंडियन ओपिनियन साप्ताहिक पत्र निकाल कर भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के स्वाभिमान एवं अधिकार की लड़ाई को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचा दिया।

मर्यादा पत्रिका ने जून 1922 में तथा चाँद पत्रिका ने जनवरी, 1926 में -'प्रवासी अंक' निकालकर पूरे देश का ध्यान प्रवासी भारतीयों की ओर आकर्षित किया। प्रेमचन्द जी ने भी चाँद के प्रवासी अंक के लिए 'शुद्रा' कहानी लिखी जो मॉरिशस गये भारतीय मजदूरों की यातना, विवशता एवं सतीत्व की दृढता पर लिखी गयी थी। भारतीय भाषाओं में सम्भवत: यह पहली कहानी थी जो किसी बडे.साहित्यकार द्वारा गिरमिटिया मजदूरों के छल-कपट पूर्ण प्रवास में गौरों द्वारा अमानवीय शोषण की वास्तविकता को पाठकों तक पहुँचा रहीं थी।

20वीं सदी के दूसरे दशक में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने इस प्रवासी संसार के प्रति देश में जाग्रति उत्पन्न करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने 1914 से आरम्भ कर 1936 तक प्रवासी भारतीयों के उत्थान, कल्याण तथा सम्पर्क के लिए कार्य करते रहे। 15 जून 1914 को चतुर्वेदी जी की भेंट तोताराम से हुई जो फीजी द्वीप में 21 वर्ष रहकर भारत लौटे थे। चतुर्वेदी जी ने 15 दिन तक उनके संस्मरण लिखे और 1914 में ही फीजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुयी। जो प्रवासी भारतीयों के दु:ख-दर्द पर लिखी गयी हिन्दी में यह पहली पुस्तक थी।

केन्द्रीय सत्ता का नेतृत्व जब अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के रूप में किया तथा डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने इंग्लैण्ड में भारतीय उच्चायुक्त का पद संभाला तो प्रवासियों के संबंध में एक नए युग का आरम्भ हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी का एकल काव्यपाठ कराकर तो इतिहास ही रच डाला। उन्होंने लंदन में हिन्दी की संस्थाओं की स्थापना कर, कवि सम्मेलन कराए, हिन्दी-लेखकों को इंग्लैण्ड आमंत्रित किया, प्रवासी हिन्दी लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित कराने की व्यवस्था की और हिन्दी भाषा-साहित्य के विकास के लिए सदैव तत्पर रहें। देश के प्रवासियों एवं भारतवंशियों के सम्मान एवं मिलन के लिए 9-11 जनवरी 2013 को पहला 'प्रवासी भारतीय दिवस' नई दिल्ली में आयोजित किया। विश्व के लगभग दो करोड़ भारतवंशी प्रवासियों ने पहली बार अनुभव किया कि उनकी मातृभूमि उन्हें भूली नही हैं। वसंत त्रैमासिक पत्रिका (मॉरिशस) के संपादक डॉ. बीरसेन जागासिंह ने 'प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस' का अभिनन्दन करते हुए अपने संपादकीय में लिखा था कि गिरमिटियों के वंशजों की तीन-चार पीढियों के बाद भी 'भारतमाता' को विस्मृत नही किया गया। उन दरिद्र परन्तु स्वाभिमानी गिरमिटियों के बच्चों ने आज भी भारतीयता की ज्योति जलाये रखी है। हिन्दी का झंडा फहराये रखा हैं। और उनमें से अधिकतर ने हिन्दुत्व को 'धर्मो रक्षति रक्षित:' के अनुसार सुरक्षित रखा हैं।

विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी भाषा की स्थिति काफी मजबूत हैं। हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन विश्व के 46 से अधिक देशों में होता हैं, परन्तु सभी देशों में हिन्दी में साहित्य की रचना नही होती। हिन्दी के प्रवासी साहित्य के सर्वेक्षण के लिए भारतेत्तर देशों को निम्नलिखित वर्गो में विभाजित किया जा सकता है:-

1 गिरिमटिया मजदूरों के देशों का हिन्दी साहित्य इन देशों में मॉरिशस, फीजी, सूरीनाम, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाड एण्ड टोबैगो आदि देश आते हैं।

2 भारत के पड़ौसी देशों का हिन्दी साहित्य इन देशों में नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार (बर्मा) आदि देशों की गणना की जाती हैं।

3 विश्व के अन्य महाद्वीपों का हिन्दी साहित्य: इन महाद्वीपों को पांच भागों में बाँटा जा सकता हैं।

(क) अमेरिका महाद्वीप: संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा आदि।

(ख) यूरोप महाद्वीप: रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, हॉलैण्ड, नीदरलैण्ड, नार्वे, डेनमार्क,, ऑस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैण्ड, स्वीडन, फिनलैण्ड, इटली, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया,, बुल्गारिया, यूक्रेन, क्रोएशिया आदि।

(ग) मध्य-एशिया के देशों का हिन्दी साहित्य: इनमें अधिकांश मुस्लिम देश हैं- इराक, ईरान, आबूधाबी, टर्की आदि।

(घ) एशिया महाद्वीप: चीन, जापान, कोरिया, थाईलैण्ड आदि।

(ङ) ऑस्ट्रेलिया: ऑस्ट्रेलिया आदि।

गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिन्दी साहित्य

19वीं शताब्दी के चौथे दशक से भारतीयों को हजारों लाखों की संख्या में गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रिका आदि देशों में, छल-प्रलोभन में फँसाकर ले जाना शुरू किया। भारतीय एक ही जैसी परिस्थितियों में कलकत्ता तथा चैन्नई बंदरगाहों से जहाज में जानवरों की तरह लादकर इन देशों में भेजे गए थे। ऐसी दुर्दशा तथा घोर दासत्व की स्थिति में रहने वाले भारतीय मजदूर अधिकांशत: पूर्व उत्तर प्रदेश तथा बिहार के थे जो भोजपुरी भाषी थें; किन्तु कुछ लोग दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के थे। कुछ मजदूर अपने साथ रामचिरतमानस, हनुमान चालीसा, आल्हा, सत्यनारायण कथा, महाभारत, गीता, सुखसागर आदि ग्रन्थ ले गए थें जिनके कारण ये भारतीय विपत्ति, शोषण और व्यथा को सहन करने का साहस तथा अपनी संस्कृति एवं भाषा को जीवित रखने का अटूट संकल्प गिरजानन, पं. श्रीनिवास जगदत्त, नेमनारायण, गुरूजी, जयनारायण राय, मोहनलाल मेहता, गिरधारी लाल, लेखमन भगत, सूर्यप्रसाद मंगरभगत, ब्रजेन्द्र कुमार भगत, शिवसागर रामगुलाम, प्रो. वासुदेव, विष्णुदयाल, सोमदत्त बखोरी, आदि अनेक हिन्दी प्रेमियों एवं देशभक्तों ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की धारा को आगे विकसित किया।[5]

मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में गद्य की विद्याओं का समुचित विकास हुआ है। मॉरिशस की हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' (1935-38) में अधिकांश गद्य विद्याओं का जन्म हो चुका था। उपन्यास लेखन का प्रारम्भ 1960 में कृष्णलाल बिहारी के उपन्यास-लेखन में आगमन से हुआ। अभिमन्यु अनत ने भी 32 उपन्यास लिखे। अनत ने अपने देश के गूँगे एवं चीखते इतिहास को 'लाल पसीना' गाँधी जी बोले थे, तथा और पसीना बहता रहा, उपन्यास में प्रस्तुत किया। मॉरिशस में हिन्दी की पहली कहानी के रूप में सूर्यप्रसाद मंगर भगत की कहानी 'विनाश' (1934) वली मुहम्मद की अनबोलती चिड़िया तथा पं. जय प्रकाश शर्मा की कहानी 'तारा' (1934) का उल्लेख किया जाता है। कहानियों वैश्यावृत्ति, दहेज, आर्यसमाज तथा सनातन धर्म के मतभेद और दृढ, निर्धन, धनी का अंतर, आदि विषय थें 'वसंत' पत्रिका के संपादन के बीस वर्षों का समय मॉरिशस की हिन्दी कहानी का स्वर्णयुग कहा जा सकता हैं।

मॉरिशस में हिन्दी नाटक तथा रंगमंच का उद्भव और विकास 20वीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। 19वीं सदी के अंतिम चरण में 'रामलीला', इन्द्रसना: कृष्ण-लीला आदि धार्मिक नाटकों की धूम थी। मॉरिशस में जब बंबई की नाटक कंपनियों ने जाना शुरू किया तो खड़ी बोली का विकास हुआ। और नाटक की रंगमंच की उन्नति हुई।

पड़ोसी देशों का हिन्दी साहित्य

भारत के पड़ोसी देशों में हिन्दी साहित्य की रचना की स्थिति सुखद नहीं हैं। पाकिस्ताान व बांग्लादेश में उर्दू साहित्य हिन्दी में अनूदित हुआ हैं। नेपाल के हिन्दी प्रोफेसर सूर्यनाथ गोप के अनुसार नेपाल में हिन्दी ग्रन्थों की संख्या एक हजार से अधिक हैं, परन्तु अधिकांशत: अप्रकाशित हैं।

अमेरिका महाद्वीप का हिन्दी साहित्य— अमेरिका में भारतीय विद्या भवन, चिन्मय शिक्षा, हिन्दू मंदिर, तथा साहित्यिक एवं भाषिक संस्थाओं की स्थापना हुई। अमेरिका के कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह ने 'अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति' की 1980 में स्थापना की और कवि सम्मेलनों की परम्परा आरम्भ की उसके बाद रामेश्वर अशान्त, गुलाब खण्डेलवाल, भूदेव शर्मा, वेदप्रकाश, 'बटुक' प्रोफेसर राम चौधरी, सुषमा वेदी, डॉ. संधीर, डॉ. सुधा ओम ढींगरा, रेणु गुप्ता राजवंशी, आदि हिन्दी साहित्यकारों, हिन्दी प्रोफेसरों तथा हिन्दी प्रेमियों ने वहाँ प्रवासी साहित्य में उसने अपनी अलग पहचान बनी ली है। रामेश्वर अशान्त ने न्यूयार्क में विश्व हिन्दी समिति की स्थापना की कवि सम्मेलन कराये, हिन्दी पर भव्य कार्यक्रम किये 'सौरभ' पत्रिका निकाली। हिन्दी प्रेमियों को एकत्रित किया और अपना कविता संग्रह 'दूर किनारा गहरा पानी' 1995, तथा उपन्यास यशोधर्मन प्रकाशित करवाया।

अशान्त न्यूयार्क में सातवाँ हिन्दी सम्मेलन करवाना चाहते थे किन्तु करवा नहीं पाये। डॉ. भूदेव शर्मा ने हिन्दू एजुकेशन एण्ड रिलीजियस सोसाईटी ऑफ अमेरिका बनायी और हिन्दी में विश्व विवेक त्रेमासिक पत्रिका निकाली। डॉ. भूदेव शर्मा गणित के प्रोफेसर होने पर भी हिन्दी भाषा साहित्य एवं हिन्दू संस्कृति के

विकास और प्रचार के लिए महत्वपूर्ण कार्य करते रहें। उन्होंने अमेरिका में सरस्वती नदी, गोस्वामी तुलसीदास आदि पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ की तथा हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना में भी सक्रिय सहयोग दिया। इधर देवेन्द्र सिंह ने हिन्दी यू. एस. ए. की स्थापना की और कुछ नये हिन्दी प्रेमी नये उत्साह तथा नई योजना लेकर सामने आये हैं। इन सभी हिन्दी संस्थाओं के लक्ष्य में प्राय: समानता है। विश्व में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का प्रचार एवं विकास हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था और नई भारतवंशी पीढ़ी को भारत के धर्म संस्कृति तथा मूल्यों से जोड़ना संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को एक अधिकृत भाषा बनाना एवं भारत के साथ सेतु का काम करना आदि। यद्यपि यह संस्थाएँ स्वतंत्र एवं स्वायत हैं, किन्तु इनमें परस्पर सौहार्द्र, समन्वय तथा सहयोग की आवश्यकता है। यदि यह अपना एक फेडरेशन बनाकर परस्पर सहयोग के साथ कार्य करे तो अमेरिका में हिन्दी एवं साहित्य के विकास की संभावना बहुत अधिक हैं।

अमेरिका में जो प्रवासी हिन्दी लेखक लिख रहे हैं उनमें कविता सबसे प्रिय विधा है। उसके बाद कहानी, फिर उपन्यास एवं निबन्ध। वेदप्रकाश 'बटूक' प्रवासी कवियों में एक प्रतिष्ठित नाम हैं यह लगभग चार दशकों से लिख रहे हैं। और उनके 21 कविता संग्रह छपे हैं। त्रिविधा 1965, बन्धन अपने देश पराया 1976, कैदी भाई बन्दी देश 1977, आपात शतक 1977, नीलकण्ठ बन न सका 1978, एक बूंद ओर 1980, लौटना घर के वनवास 1981, कल्पना के पंख पाकर 1981, रात का अकेला सफर 1981, नये अभिलेख का सूरज 1982, आदि। सुधा ओम ढींगरा प्रदेश में स्वदेशानुभूतियों की कवयित्री हैं जिसे वे प्रवासी वेदना के रूप अभिव्यक्त करती हैं सुधा अपनी एक कविता में कहती हैं 'मैं रोई प्रदेश में। मेरे साथ रोई मेरी तनहाई। मेरा अकेलापन। मेरा एकान्त। जो सिमट आया हैं। मेरे इर्द गिर्द। न चाहते हुए भी।' इसे यह स्पष्ट हैं कि अमेरिका में कविता लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही हैं और वहाँ के कवि, कवयित्रियाँ अतुकान्त कविता, गीत, गज़ल आदि विभिन्न काव्य रूपों में प्रवासीकालीन अपनी अनुभूतियों को वाणी दे रहे हैं। वहाँ के कवि महाकाव्य खण्ड काव्य आदि प्रबंन्ध काव्य की रचना के भी प्रयोग कर रहे हैं।

अमेरिका से जुड़े कनाड़ा में भी हिन्दी भाषा और साहित्य प्रवासी भारतीयों को एक सुत्र में बाँधता है और वहाँ भी हिन्दी साहित्य की रचना एवं हिन्दी तथा पंजाबी आदि भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार का अनुकूल वातावरण बन गया हैं। कनाडा में धर्म, संस्कृति, भाषा, साहित्य, मैत्री आदि के विकास के लिये कई संस्थाएँ बनी हुई हैं वहाँ 'हिन्दी परिषद' क्यूबेक हिन्दी संघ, विश्व हिन्दी परिषद, हिन्दी परिषद, नागरी प्रचारिणी सभा, सद्भावना हिन्दी साहित्यिक संस्था आदि कई संस्थाएँ हिन्दू धर्म संस्कृति एवं हिन्दी भाषा साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये वर्षों से कार्य कर रही हैं। अमेरिका और कनाड़ा में कई संस्थाएँ एवं व्यक्ति हिन्दी भाषा एवं साहित्य की उन्नति के लिए कार्यरत हैं। यदि यह सभी मिलजुलकर काम करे तो और भी अच्छा काम हो सकता हैं।

यूरोपीय महाद्वीप का हिन्दी साहित्य में- यूरोप महाद्वीप में इंग्लैण्ड ही एक ऐसा देश हैं वहाँ पर प्रवासी भारतीयों ने कविता कहानी नाटक पत्रकारिता आदि विद्याओं में महत्वपूर्ण कार्य किया हैं इधर ब्रिटेन के प्रवासी हिन्दी साहित्य पर दो पुस्तकें आयी हैं- राधाकान्त भारती द्वारा सम्पादित ब्रिटेन में हिन्दी रचनाकार 2003 तथा उषा राजे संक्सेना का ब्रिटेन में हिन्दी 2006, इनमें उषा राजे की पुस्तक इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं कि वह ब्रिटेन में हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास और इसके इतिहास को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती हैं। इंग्लैण्ड में कीर्ति चौधरी एवं सत्येन्द्र श्रीवास्तव ऐसे कवि हैं जो चार-पाँच दशकों से कविता लिख रहे हैं। कीर्ति चौधरी की कविताएँ 1958 खुल्ले आसमान के नीचे 1968 एवं कीर्ति चौधरी की कविताएँ 2004 आदि कविता संग्रह तथा सत्येन्द्र श्रीवास्तव के स्थिर यात्राएँ 1965, मिसेज जॉन्स और वह गली (लम्बी कविता) सतह की गहराई 1980, कुछ कहता हैं यह समय 1999 एवं आज स्थिर हैं। ज्वार 2008 तथा चार अंग्रेजी में लिखी मूल कविताओं के संग्रह छपे हैं। इनमें कुछ कवियों ने निजी आत्मानुभूतियों की अभिव्यक्ति की हैं प्रवास का कोई प्रभाव नहीं हैं। किंतु अधिकांश प्रवासी जीवन की संवेदनाएँ हैं स्वदेश की स्मृति हैं और परदेश के जीवन के विविध रंग हैं।

निष्कर्ष

इस प्रवासी हिन्दी साहित्य ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई हैं, क्योंकि अपनी संवेदना, सरोकार जीवन-मूल्यों एवं रूप-रचना में अपनी अलग विशिष्टता रखता है। परदेश में रहते हुए स्वदेश को देखने का दृष्टिकोण बदलता हैं और वहाँ की परिस्थितियाँ, जीवन, संघर्ष आदि भी जीवन को देखने, समझने जीने के दृष्टिकोण क्रान्तिकारी रूप में उद्वेलन एवं परिवर्तन उत्पन्न करता है। प्रवासी लेखक अनेक बार स्वदेश परदेश के द्वन्द्व में जीता है और नयी-नयी अनुभूतियों, तनाव तथा विसंगतियों से गुजरता है और रचना में नये भाव बोध नया दृष्टिकोण तथा नये जीवन-मूल्यों की सर्जना होती है। हिन्दी को इस प्रकार नये प्रकार का साहित्य मिलता है जो भारत में रहते हुए नहीं रचा जा सकता था। यह ठीक है कि प्रवासी लेखक ने अपनी मातृभूमि और अपने देश का मनोभाव रहता है, किन्तु विदेशी भूमि के संस्पर्श से ही उसमें एक मौलिकता एक

विशिष्टता की चमक उत्पन्न होती हैं। अपने देश से बाहर जाकर भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों, जीवनशैलियों एवं मूल्यों तथा जीवन-संघर्षों तथा चूनौतियों से जो टकराहट उत्पन्न होती हैं, जो संघर्ष एवं द्वन्द्व होता है। उसमें एक नयी संवेदना, एक नई जीवन दृष्टि एवं जीवन का नया स्वप्न जन्म लेता हैं। हिन्दी का प्रवासी साहित्य इसी जीवन संघर्ष तथा इसी नये जीवन-स्वप्न का साहित्य कहा जा सकता हैं। और इसी रूप में उसकी अलग पहचान बनती हैं और इसी रूप में वह हिन्दी की मुख्य साहित्यिक धारा का अंग बनते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रख सकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयनका, कमल किशोर, हिन्दी का प्रवासी साहित्य, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ.सं. 17
2. वसन्त त्रैमासिक, मॉरिशस, अंक-105, अप्रैल, 2003, पृ.सं. 3
3. गोयनका, कमल किशोर, हिन्दी का प्रवासी साहित्य, पूर्वोक्त, पृ.सं. 42
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 451
5. गोयनका, कमल किशोर (संपा), मॉरिशस की हिन्दी कहानियाँ, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2000
6. वर्मा, विमलेश कान्ति, प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य, भारतीय ज्ञान पीठ लोधी रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016
7. गोयनका, कमल किशोर, मॉरिशस के हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत से बातचीत, ईशा ज्ञान दीप, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017
8. वर्मा, विमलेश कान्ति, फिजी का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012
9. राय, डॉ. अजीत कुमार, गिरमिटिया मजदूरों का प्रवासन, यश पब्लिकेशनस, शाहदरा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
10. निधि, हीरामन, प्रवासी भारतीय साहित्य श्रृंकला, स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012